चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	28.4.22	4	1-5

भूमि की उत्पादक क्षमता कम होने से फसलों की पैदावार गिरी

जागरण संवाददाता, हिसार : दिनों दिन भूमि की उत्पादक क्षमता कम होने से कृषि विभाग के अधिकारियों की चिंता बढ़ गई है। बुधवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) आयोजित हुई। जिसमें उत्पादक क्षमता कम होने पर मंथन किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो.बीआर कांबोज ने कहा कि फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर घट रहा है, वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। • एचएयू

खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर 36.77 टन हुआ

प्रो कांबोज ने बताया कि देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 टन था वह बढ़कर 36.77 टन हो चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है। जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा कि यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेहूं फसल चक्र के बारे में पुन: विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प हैं जो किसानों की आमदनी दोगुनी करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं। वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त करने की आवश्यकता है। इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है।

कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी गई

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डा. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए प्रदेश में फसल विविधिकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी प्रकार धान की पराली को जलाने की बजाए इसका प्रबंधन करने वाले किसानों को एक हजार रूपए प्रति एकड़ सहायता राशि के रूप में प्रदान किए जा रहे है। उन्होंने कहा इस वर्ष प्रदेश में प्राकृतिक खेती को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से 2500 एकड़ भूमि में प्रदर्शन लगाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.4.22	3	4-5

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यकः प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज़ | हिसार

फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन-प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विवि में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेहूं फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कृषि विशेषज्ञों से किसानों से अधिक पैदावार देने वाली फसल किस्मों, लेजर लैंड लेवलर, जीरो टिल, मल्टी क्रॉप प्लांटर, फसल अवशेष प्रबंधन प्रणाली, समन्वित खरपतवार व कीट प्रबंधन तकनीकें प्रयोग करने के लिए प्रेरित करने के लिए कहा।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई रणनीति की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	28.4.22	4	1-6

कार्यशाला

कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी हुए शामिल

फसल विविधीकरण से किसानों की आमदनी हो सकती है दोगुनी

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से भूजल स्तर निरंतर घट रहा है। भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके।

फसल विविधीकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती से किसानों की आमदनी दोगुनी हो सकती है। उक्त विचार बुधवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने व्यक्त किए। वह विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रांति के परिणाम स्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन 1966-67 में मात्र 2.59 मीट्रिक टन था, जो अब 36.77 मीट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरंतर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। कुलपति ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है।

कृषि अधिकारी कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनीति तैयार करने का आह्वान किया। बिजाई करने के साथ फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर जैविक खादों के साथ उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने और उचित फसल अवशेष प्रबंधन के लिए प्रेरित करें। कृषि विभाग के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने बताया कि धान की पराली का प्रबंधन करने वाले किसानों को एक हजार रुपये प्रति एकड़ सहायता राशि के रूप में प्रदान किए जा रहे हैं।

नई सिफारिशों के लिए हुआ मंथन

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। साथ ही विभिन्न फसलों के लिए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर मंथन भी किया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कार्यशाला में प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	28.4.22	10	2-5

दो दिवसीय कार्यशाला में प्रदेशभर से कृषि अधिकारी पहुंचे

सभी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण समय की जरूरत

कृषि के लिए जल के अंधाधुध दोहन से भूजल स्तर निरंतर घट रहा है, विकट होंगे परिणाम

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हिसार। कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुध दोहन से जहां भूजल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढकर 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने से ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को धान-गेंहू फसल चक्र बारे दोबारा विचार करने की जरूरत है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए फसल विविधिकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस वर्ष प्राकृतिक खेती को लोकप्रिय बनाने के लिए 2500 एकड़ भूमि में प्रदर्शन लगाए जाएंगे।

■ किसानों को कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की

नई सिफारिशों के लिए हुआ मंथन : डॉ. मंडल

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देने के साथ मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में बताया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	28.4.22	4	1-4

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक : प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 अप्रैल (राठी): फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की ऊर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की 2 दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशतीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मीट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मीट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता

कार्यशाला को संबोधित करते मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेदार धान-गेहूं फसल चक्र बारे पुन: विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है जो किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते है।

कुलपति ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनीति तैयार करने का आह्वान किया। उन्होंने फसलों की समय पर बीजाई करने के साथ फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर जैविक खादों के साथ ऊर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने और उचित फसल अवशेष प्रबंधन करने पर बल दिया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। उन्होंने कहा इस वर्ष प्रदेश में प्राकृतिक खेती को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से 2500 एकड़ भूमि में प्रदर्शन लगाए जाएंगे।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कार्यशाला की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28.4.22	5	3-5

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक : प्रो. काम्बोज

कृषि अधिकारियों की कार्यशाला का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी हुए शामिल

हिसार : कृषि अधिकारी कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, 27 अप्रैल (विरेंद्र वर्मा) : फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रादन करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। कुलपति ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनिति तैयार करने का आहवान किया। उन्होंने कहा कृषि वैज्ञानिकों का प्रत्येक प्रयास किसानों को अधिक लाभ दिलाने के साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर केन्द्रित होना चाहिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणतीति की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	28.4.22	8	4-5

कार्यशाला में जुटे कृषि अधिकारी, बोले

जलस्तर भी घट रहा, भूमि की उर्वरा शक्ति भी

हिसार, 27 अप्रैल (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में मंथन करते हुए कृषि अधिकारियों ने कहा कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां जलस्तर निरंतर घट रहा है, वहीं भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है।

इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ अधिक आर्थिक लाभ हो सके। कृषि अधिकारियों ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनीति तैयार करने का आहवान किया। उन्होंने फसलों की समय पर बिजाई करने के साथ फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर जैविक खादों के साथ उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने और उचित फसल अवशेष प्रबंधन करने पर बल दिया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। उन्होंने गत वर्ष विभिन्न खरीफ फसलों की पैदावार के साथ-साथ विभाग की विशिष्ट उपलब्धियों और नयी पहल का ब्यौरा दिया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ बलवान सिंह मंडल ने निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	27.04.2022	--	--

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक : प्रो. काम्बोज

कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी हुए शामिल

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 27 अप्रैल : फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशतीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रादन करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेंहू फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है जो किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते है। कुलपति ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनिति तैयार करने का आहवान किया। उन्होंने फसलों की समय पर बीजाई करने के साथ फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर जैविक खादों के साथ उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने और उचित फसल अवशेष प्रबंधन करने पर बल दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कृषि विशेषज्ञों से किसानों से अधिक पैदावार देने वाली फसल किस्मों, लेजर लैंड लेवलर, जीरो टिल, मल्टी क्रॉप प्लांटर, फसल अवशेष प्रबंधन प्रणाली, समन्वित खरपतवार व कीट प्रबंधन तकनीकें प्रयोग करने हेतु प्रेरित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कृषि वैज्ञानिकों का प्रत्येक प्रयास किसानों को अधिक लाभ दिलाने के साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर केन्द्रित होना चाहिए। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणतीति की जानकारी दी।

नई सिफारिशों के लिए हुआ मंथन : विस्तार शिक्षा निदेशक

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कार्यशाला की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	28.04.2022	03	1-2

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यकः प्रो. बी.आर. काम्बोज

कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी हुए शामिल

हिसार : फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक

संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशतीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रादन करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेंहू फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	28.04.2022	07	2-7

कृषि अधिकारियों ने किया दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक: प्रो. काम्बोज

■ प्रदेश भर से कृषि अधिकारी हुए शामिल

सच कहूं/संदीप सिंहमार

कृषि अधिकारी कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार। फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा वह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेहूं फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है जो किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते है।

नई सिफारिशों के लिए हुआ मथन

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कार्यशाला की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	27.04.2022	--	--

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अतयंत आवश्यक : प्रो. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशतीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढ ?र 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रादन करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब

किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेंहू फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है जो किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते है। कुलपति ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनिति तैयार करने का आहवान किया। उन्होंने फसलों की समय पर बीजाई करने के साथ फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर जैविक खादों के साथ उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने और उचित फसल अवशेष प्रबंधन करने पर बल दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कृषि विशेषज्ञों से किसानों से अधिक पैदावार देने वाली फसल किस्मों, लेजर लैंड लेवलर, जीरो टिल, मल्टी क्रॉप प्लांटर, फसल अवशेष प्रबंधन प्रणाली, समन्वित खरपतवार व कीट प्रबंधन तकनीकें प्रयोग करने हेतु प्रेरित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कृषि वैज्ञानिकों का प्रत्येक प्रयास किसानों को अधिक लाभ दिलाने के साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर केन्द्रित होना चाहिए। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणतीति की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कार्यशाला को विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	27.04.2022	--	--

कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी हुए शामिल

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यअतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मिट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मिट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेंहू फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है जो किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते है।

कुलपति ने वर्तमान समय में बदलते मौसम पर भी चिंता व्यक्त की और कहा इससे कृषि उत्पादन बहुत प्रभावित हो रहा है। इस स्थिति से निपटने के लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से विशेष रणनीति तैयार करने का आह्वान किया। उन्होंने फसलों की समय पर बीजाई करने के साथ फसलों में मिट्टी जांच के आधार पर जैविक खादों के साथ उर्वरकों का संतुलित प्रयोग करने और उचित फसल अवशेष प्रबंधन करने पर बल दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने कृषि विशेषज्ञों से किसानों से अधिक पैदावार देने वाली फसल किस्मों, लेजर लैंड लेवलर, जीरो टिल, मल्टी क्रॉप प्लांटर, फसल अवशेष प्रबंधन प्रणाली, समन्वित खरपतवार व कीट प्रबंधन तकनीकें प्रयोग करने हेतु प्रेरित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कृषि वैज्ञानिकों का प्रत्येक प्रयास किसानों को अधिक लाभ दिलाने के साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर केन्द्रित होना चाहिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक डॉ. रोहताश सिंह ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी।

नई सिफारिशों के लिए हुआ मंथन : विस्तार शिक्षा निदेशक

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कार्यशाला की विस्तृत जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	27.04.2022	--	--

निरंतर बढ़ रही जनसंख्या खाद्य सुरक्षा के लिए चुनौती : प्रो. काम्बोज

कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला शुरू, प्रदेश से कृषि अधिकारी हुए शामिल

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। फसल उत्पादन बढ़ाने के चलते प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहे हैं। कृषि के लिए जल के अंधाधुंध दोहन से जहां भू-जल स्तर निरंतर घट रहा है वहां भूमि की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही है। इसलिए किसानों को ऐसी कृषि प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ किसानों को अधिक आर्थिक लाभ हो सके।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ)को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा देश में हरित क्रान्ति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में आशतीत वृद्धि हुई है। खाद्यान्न उत्पादन जो 1966-67 में मात्र 2.59 मीट्रिक टन था वह बढ़कर 36.77 मीट्रिक टन का आंकड़ा छू चुका है। परन्तु सघन खेती से भूमि की उत्पादन शक्ति नष्ट होने के कारण ज्यादातर फसलों की पैदावार में या तो स्थिरता आ चुकी है या गिरावट होने लगी है जो निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के लिए चुनौती पैदा कर रही है। उन्होंने कहा यह उपयुक्त समय है जब किसानों को उपरोक्त स्थिति के लिए जिम्मेवार धान-गेंहू फसल चक्र बारे पुनः विचार करने की जरूरत है। फसल विविधिकरण, समन्वित खेती, अनुबंध खेती, प्राकृतिक खेती या जैविक खेती ऐसे विकल्प है जो किसानों की आमदनी दोगुणा करने के लिए उपयोगी साबित हो सकते है।

नई सिफारिशों के लिए हुआ मंथन

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह ने कार्यशाला की जानकारी देते हुए निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। कार्यशाला का आयोजन विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न फसलों के लिए की गई सिफारिशों पर मंथन करते हुए कुछ नई सिफारिशों को लागू करवाने को लेकर किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जौत राम शर्मा ने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.4.22	4	1-4

एचएयू के वैज्ञानिकों ने हिसार समेत प्रदेश के 9 जिलों में ग्वार की फसल में होने वाले रोग पर की रिसर्च

हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों के लिए ग्वार महत्वपूर्ण फसल, इसमें प्रोटीन की मात्रा 42% से ज्यादा

महयूब अली | हिसार

ग्वार की फसल में लगने वाले जीवाणु अंगमारी नामक बीमारी पर एचएयू के वैज्ञानिकों ने सफल रिसर्च की है। रिसर्च में वैज्ञानिकों को पता चला है कि देरी से बोई जाने वाली फसल जीवाणु अंगमारी बीमारी की चपेट में अधिक आती है। यदि समय पर फसल को उगाया जाए तो रोग पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता है। सफल रिसर्च करने पर एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने भी वैज्ञानिकों की सराहना की है। ग्वार हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों के लिए एक महत्वपूर्ण फसल है। बीज के लिए ग्वार मुख्य तौर पर हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, सिरसा, गुड़गांव, चरखी दादरी, जींद, झज्जर और रोहतक में उगाया जाता है। इसके बीज में 35 प्रतिशत ग्रोंद होने के कारण, औद्योगिक दृष्टि से ग्वार की फसल का महत्व और भी बढ़ जाता है। ग्वार चूरी जो कि बहुत उपयोगी होती है क्योंकि इसमें 42 प्रतिशत से ज्यादा प्रोटीन पाया जाता है।

ग्वार का गोंद विस्फोट, खनन, तेल, खाद्य पदार्थ व कपड़ा उद्योगों के लिए भी है उपयोगी

जैंथामोनास एक्सोनोपाड़िस नामक जीवाणु से होती है अंगमारी बीमारी

ग्वार में आने वाली जीवाणु अंगमारी बीमारी बहुत नुकसान पहुंचाती है तथा ग्वार के उत्पादन पर बहुत हानि पहुंचती है। यह बीमारी जैंथामोनास एक्सोनोपाड़िस नामक जीवाणु के कारण होती है। इस बीमारी के कारण पत्तों पर भूरे-काले रंग के जलसिक्त धब्बे बन जाते हैं। मौसम में नमी होने से ये धब्बे आपस में मिलकर बड़े आकार के बन जाते हैं। इसके बाद ये धब्बे फलियों व तनों पर भी दिखते हैं। रोग ग्रस्त पौधे सूख जाते हैं। इस बीमारी के फलने-फूलने में मौसम का बहुत अधिक महत्व है।

वीसी ने दी बधाई : विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर डॉ. बी.आर. कांबोज ने वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित किया व अपनी तरफ से हरसंभव सहायता का आश्वासन दिया। विभाग के अध्यक्ष डा. हवासिंह सहारण ने वैज्ञानिकों के इस अनुसंधान को अत्यंत महत्वपूर्ण माना व उनकी इस उपलब्धि पर बधाई दी।

ग्वार की फसल पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है

एचएयू के डॉ. मनजीत सिंह घणघस के अनुसार, ग्वार की जीवाणु अंगमारी पर मौसम के महत्व को देखकर उनके साथ एचएयू के डा. पूजा सांगवान, डा. विनोद मलिक व डा. महाबीर सिंह बोचल्या ने शोध किया। ग्वार की तीन किस्मों हरियाणा ग्वार 365, हरियाणा ग्वार 563, हरियाणा ग्वार 220 व तीन बिजाई या बुआई के समय पर, ग्वार की जीवाणु अंगमारी बीमारी के बढ़ने में मौसम (जैसे अधिकतम तापमान, नैविन्तम तापमान, सापेक्ष आद्रता सुबह, सापेक्ष आद्रता शाम, वर्षा आदि) का प्रभाव अत्यधिक है।

रिसर्च में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिकों ने पाया प्रथम स्थान

हाल ही में श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर-जयपुर में 23-26 मार्च 2022 को इंडियन फाइटोपैथोलॉजीकल सोसायटी ने 'पौध रोगः पुनरावलोकन और संभावनाएं' विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में देश-विदेश से सैकड़ों वैज्ञानिकों ने भाग लिया और अपने शोध कार्य को प्रस्तुत किया। डॉ. मनजीत सिंह घणघस ने 'रोग प्रसार विज्ञान या महामारी विज्ञान और फसल मुल्यांकन' थीम के अंतर्गत 'ग्वार की जीवाणु अंगमारी पर मौसम का प्रभाव' विषय पर अपने शोध कार्य को प्रस्तुत किया। इस अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में डॉ. मनजीत सिंह घणघस व सहयोगी वैज्ञानिकों के इस कार्य को अति महत्वपूर्ण माना गया। इस विषय पर उत्कृष्ट प्रस्तुति देकर डॉ. मनजीत सिंह घणघस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	28.4.22		

गन्ने की मध्यकालीन किस्मों की अप्रैल से मई तक करें बुवाई

कम से कम 3 साल तक फसल-चक्र अपनाएं किसान

भास्कर न्यूज़ | हिसार

गन्ने की अगेती और मध्यकालीन किस्मों का सामान्य रोपण समय 31 मार्च तक समाप्त हो जाता है। देर से बुवाई के लिए केवल मध्यकालीन किस्मों (सीओएच 119, सीओ 05011) को अप्रैल के महीने में या गेहूं की कटाई के बाद लगाया जा सकता है। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बी. आर. काम्बोज और अन्य वैज्ञानिक प्रदेश के किसानों को गन्ने की उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी दे रहे हैं। वैज्ञानिकों ने किसानों को रोगी खेत में कम से कम तीन साल तक फसल-चक्र अपनाने की भी सलाह दी है।

गन्ने की बुवाई के लिए यह करें

- बीज के लिए उपयुक्त गन्ने का नम गर्म शोधन मशीन से 54 डिग्री सेल्सियस पर दो घंटा तक उपचारित करें।
- बीज गन्ना को मैनकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर के घोल में 4-5 मिनट तक डुबोकर बीज उपचार करें।
- रोगी खेत में कम से कम तीन साल तक फसल-चक्र अपनाएं।
- यदि गन्ना, गेहूं की कटाई के बाद बोया गया है तो आधी मात्रा नत्रजन की और पूरी मात्रा फास्फोरस व पोटाश की बिजाई के समय डालें तथा शेष बची हुई नत्रजन की मात्रा जून के अन्त में डालें।